📖 JSSC इंटरमीडिएट स्तर: झारखण्ड सामान्य ज्ञान

www.CrackJSSC.com

🌍 अध्याय 1: झारखण्ड का भौगोलिक स्वरूप एवं पर्यावरण

1. भौगोलिक स्थिति और विस्तार

- **भौगोलिक अवस्थिति**: झारखण्ड भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक पूर्णतः **भू-आवेष्टित (Landlocked)** राज्य है। इसका मतलब है कि इसकी कोई भी सीमा समुद्र को नहीं छूती।
- **अक्षांशीय विस्तार**: 21°58'10" उत्तरी अक्षांश से 25°19'15" उत्तरी अक्षांश तक।
- **देशांतरीय विस्तार**: 83°19'50" पूर्वी देशांतर से 87°57' पूर्वी देशांतर तक।
- **राज्य का आकार**: झारखण्ड का आकार लगभग **चतुर्भुजाकार (Quadrilateral)** है।
- **क्षेत्रफल**: राज्य का कुल क्षेत्रफल **79,714 वर्ग किलोमीटर** है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का **2.42%** है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का **15वाँ बड़ा राज्य** है।
- **लम्बाई और चौड़ाई**:
  - उत्तर से दक्षिण की लम्बाई: **380 किमी**
  - पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई: **463 किमी**

2. प्रशासनिक विभाजन एवं सीमाएँ

झारखण्ड की सीमाएँ भारत के **5 राज्यों** को स्पर्श करती हैं:

1. **उत्तर में**: बिहार (झारखण्ड के 10 जिले बिहार की सीमा को छूते हैं)।
2. **पूर्व में**: पश्चिम बंगाल (10 जिले सीमा साझा करते हैं)।
3. **पश्चिम में**: छत्तीसगढ़ (4 जिले सीमा साझा करते हैं)।
4. **दक्षिण में**: ओडिशा (4 जिले सीमा साझा करते हैं)।
5. **उत्तर-पश्चिम में**: उत्तर प्रदेश (केवल **गढ़वा** जिला उत्तर प्रदेश की सीमा को छूता है)।

- **नोट**: गढ़वा झारखण्ड का एकमात्र ऐसा जिला है जो तीन राज्यों (बिहार, यूपी, छत्तीसगढ़) की सीमाओं को स्पर्श करता है।
- **खूंटी और लोहरदगा** झारखण्ड के ऐसे दो जिले हैं जिनकी सीमा किसी भी अन्य राज्य को स्पर्श नहीं करती।

---

www.CrackJSSC.com

📜 अध्याय 2: झारखण्ड का इतिहास एवं जनजातीय विद्रोह

झारखण्ड का इतिहास औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए किए गए संघर्षों की गौरवगाथा है।

1. ढाल विद्रोह (1767 - 1777 ई.)

- **नेतृत्वकर्ता:** जगन्नाथ ढाल।
- **कारण:** अंग्रेजों का सिंहभूम क्षेत्र में पहली बार प्रवेश और दीवानी अधिकार प्राप्त करना।
- **विशेष तथ्य:** यह झारखण्ड क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध **प्रथम विद्रोह** था। यह विद्रोह 10 वर्षों तक चला। अंत में अंग्रेजों ने जगन्नाथ ढाल को पुनः राजा स्वीकार कर इस विद्रोह को शांत किया।

2. तिलका आंदोलन (1783 - 1785 ई.)

- **नेतृत्वकर्ता:** बाबा तिलका मांझी (इन्हें 'जाबड़ा पहाड़िया' भी कहा जाता है)।
- **केंद्र:** भागलपुर और सुल्तानागंज के आस-पास का क्षेत्र (वनचरी जोर)।
- **विशेष घटना:** तिलका मांझी ने 1784 में तीर मारकर ब्रिटिश अधिकारी **क्लिवलैंड (Cleveland)** की हत्या कर दी थी।
- **परिणाम:** 1785 ई. में तिलका मांझी को भागलपुर में एक बरगद के पेड़ पर लटकाकर फाँसी दे दी गई। वे अंग्रेजों के खिलाफ फाँसी पाने वाले **पहले आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी** थे।

3. संथाल हूल / विद्रोह (1855 - 1856 ई.)

- **नेतृत्वकर्ता:** सिद्धू, कान्हू, चांद और भैरव (चारों भाई)। उनकी बहनें फूलो और झानो ने भी इसमें सक्रिय भूमिका निभाई।
- **कारण:** जमींदारों, महाजनों और ब्रिटिश प्रशासन द्वारा संथालों का अत्यधिक आर्थिक शोषण।
- **नारा:** *"अपना देश, अपना राज"* और *"माटी छोड़ो, विदेशी भागो"*।
- **विशेष तथ्य:** कार्ल मार्क्स ने इस विद्रोह को **"भारत की प्रथम जनक्रांति"** कहा था। 30 जून 1855 को भोगनाडीह में एक विशाल जनसभा हुई, इसलिए हर साल 30 जून को **'हूल दिवस'** मनाया जाता है।

4. बिरसा मुंडा का उलगुलान (1895 - 1900 ई.)

- **नेतृत्वकर्ता:** भगवान बिरसा मुंडा।
- **उलगुलान का अर्थ:** महान हलचल या महाविद्रोह।
- **मुख्य उद्देश्य:** स्वतंत्र 'मुंडा राज' की स्थापना करना और 'बेगारी प्रथा' (बिना मजदूरी के काम कराना) को समाप्त करना।
- **धार्मिक सुधार:** बिरसा मुंडा ने **'सिंहबोंगा' (एकमात्र ईश्वर)** की पूजा पर बल दिया और 'बिरसाentry/बिरसाइत पंथ' की शुरुआत की।

www.CrackSSC.com

- **परिणाम**: 3 मार्च 1900 को चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से सोते समय उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 9 जून 1900 को रांची जेल में हैजा (Ranchi Jail) के कारण उनकी रहस्यमयी मृत्यु हो गई।

---

www.CrackJSSC.com

अध्याय 3: कला, संस्कृति, त्योहार एवं भाषा-साहित्य

1. प्रमुख लोक नृत्य

- **छऊ नृत्य**: यह झारखण्ड का सबसे प्रसिद्ध **मुखौटा नृत्य** है। इसकी शुरुआत सरायकेला में हुई थी। वर्ष 2010 में इसे **यूनेस्को (UNESCO) द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत** सूची में शामिल किया गया। इसमें पुरुष कलाकार ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं का मंचन करते हैं।
- **पाईका नृत्य**: यह एक **युद्ध नृत्य** है। इसमें नर्तक सैनिक वेषभूषा धारण करके हाथ में तलवार और ढाल लेकर नृत्य करते हैं।
- **करमा नृत्य**: यह करमा पर्व के अवसर पर किया जाने वाला सामूहिक नृत्य है, जो सामूहिक ऊर्जा और भाईचारे का प्रतीक है।

2. प्रमुख जनजातीय त्योहार

- **सरहुल**: यह आदिवासियों का सबसे बड़ा त्योहार है, जो चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। यह **वसंत ऋतु का त्योहार** है जिसमें 'शाल' (सखुआ) के पेड़ की पूजा की जाती है।
- **सोहराय**: यह पालतू पशुओं (गाय-बैल) के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का त्योहार है, जो दीवाली के अगले दिन मनाया जाता है। इस अवसर पर घरों की दीवारों पर प्रसिद्ध **सोहराय चित्रकला (GI Tag प्राप्त)** की जाती है।

---

www.CrackJSSC.com

🏭 अध्याय 4: झारखण्ड के खान, खनिज और भारी उद्योग

झारखण्ड को भारत का **'रूर' (Ruhr of India)** कहा जाता है, क्योंकि जर्मनी के रूर घाटी की तरह ही झारखण्ड भी खनिज संसाधनों के मामले में अत्यंत समृद्ध है। भारत के कुल खनिज उत्पादन का लगभग **40 प्रतिशत** हिस्सा अकेले झारखण्ड से प्राप्त होता है।

1. प्रमुख खनिज संसाधन एवं उनकी खदानें

- **कोयला (Coal):**
  - झारखण्ड कोयले के भंडार (Reserves) के मामले में भारत में **प्रथम स्थान** पर है।
  - **झरिया (धनबाद) :** यह झारखण्ड का सबसे बड़ा और देश का प्रमुख कोयला क्षेत्र है। भारत का अधिकांश 'कोकिंग कोल' यहीं से प्राप्त होता है।
  - **कर्णपुरा (रामगढ़/हजारीबाग) :** यहाँ कोयले का सबसे बड़ा ब्लॉक (सुरक्षित भंडार) मौजूद है।
- **लौह अयस्क (Iron Ore):**
  - झारखण्ड में मुख्य रूप से उच्च गुणवत्ता वाला **हेमेटाइट (Hematite)** प्रकार का लोहा पाया जाता है।
  - **नोआमुंडी और चिड़िया (पश्चिमी सिंहभूम) :** 'चिड़िया' खदान एशिया की सबसे बड़ी लौह अयस्क खदानों में से एक है।
- **अभ्रक / मायका (Mica):**
  - **कोडरमा :** इसे **"भारत की अभ्रक राजधानी" (Mica Capital of India)** कहा जाता है। यहाँ अत्यंत उच्च गुणवत्ता वाला सफेद अभ्रक पाया जाता है जिसे **'रूबी मायका'** कहते हैं।
- **ताँबा (Copper):**
  - **घाटशिला (पूर्वी सिंहभूम) :** यह भारत का पहला ताँबा खान क्षेत्र है। यहाँ भारतीय ताँबा निगम (ICC) का संयंत्र स्थित है।
- **यूरेनियम (Uranium):**
  - **जादूगोड़ा (पूर्वी सिंहभूम) :** यह भारत की पहली यूरेनियम खदान है। इसका संचालन यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (UCIL) द्वारा किया जाता है।

---

www.CrackSSC.com

2. झारखण्ड के प्रमुख भारी उद्योग

- **टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO - अब टाटा स्टील) :**
    - **स्थापना :** 1907 ई. में **जमशेदजी नसरवानजी टाटा** द्वारा की गई।
    - **स्थान :** साकची, जमशेदपुर (पूर्वी सिंहभूम)। यह **स्वर्णरेखा और खरकई नदियों** के संगम पर स्थित है।
    - **उत्पादन :** यहाँ 1911 में लोहे का और 1912 में इस्पात (Steel) का उत्पादन शुरू हुआ था।
- **बोकारो स्टील प्लांट (BSL):**
    - **स्थापना :** 1964 ई. में **तृतीय पंचवर्षीय योजना** के दौरान।
    - **सहयोग :** यह रूस (तत्कालीन सोवियत संघ – USSR) के सहयोग से स्थापित भारत का पहला सार्वजनिक क्षेत्र का इस्पात कारखाना है।
    - **स्थान :** माराफारी, बोकारो।
- **हेवी इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन (HEC):**
    - **स्थापना :** 1958 ई. में रूस और चेकोस्लोवाकिया के सहयोग से।
    - **स्थान :** हटिया, रांची। इसे **"उद्योगों का उद्योग"** भी कहा जाता है क्योंकि यह अन्य भारी उद्योगों के लिए मशीनें बनाता है।

---

www.CrackSSC.com

☑ अध्याय 5: झारखण्ड की प्रमुख विकास योजनाएँ (Welfare Schemes)

झारखण्ड सरकार द्वारा राज्य के ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण और युवाओं के रोजगार के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिनसे JSSC परीक्षा में लगातार प्रश्न पूछे जाते हैं।

- **1. सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना:**
  - **उद्देश्य:** बाल विवाह को रोकना, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना और महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करना।
  - **लाभ:** कक्षा 8वीं से लेकर 12वीं तक की छात्राओं को अलग-अलग चरणों में कुल **40,000 रुपये** की वित्तीय सहायता दी जाती है।
- **2. गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना:**
  - **उद्देश्य:** झारखण्ड के गरीब और होनहार छात्रों को उच्च शिक्षा (इंजीनियरिंग, मेडिकल, लॉ आदि) के लिए आर्थिक मदद देना।
  - **विशेषता:** छात्रों को बिना किसी गारंटी के **4% के मामूली ब्याज** पर **15 लाख रुपये** तक का शिक्षा ऋण (Education Loan) दिया जाता है।
- **3. मुख्यमंत्री सारथी योजना:**
  - **उद्देश्य:** राज्य के युवाओं को निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण (Skill Training) प्रदान कर रोजगार से जोड़ना।
  - **भत्ता:** प्रशिक्षण के बाद यदि 3 महीने तक रोजगार नहीं मिलता, तो युवाओं को ₹1000 और युवतियों/दिव्यांगों को ₹1500 प्रति माह 'रोजगार प्रोत्साहन भत्ता' दिया जाता है।
- **4. अबुआ आवास योजना:**
  - **उद्देश्य:** राज्य के बेघर और कच्चे मकानों में रहने वाले परिवारों को पक्का मकान उपलब्ध कराना।
  - **विशेषता:** इसके तहत लाभार्थियों को **3 कमरों का पक्का मकान** बनाने के लिए सरकार द्वारा शत-प्रतिशत सहायता राशि दी जाती है।
- **5. मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना:**
  - **उद्देश्य:** ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों को शहरों और मुख्य बाजारों से जोड़ना।
  - **लाभ:** इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों, वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांगों और आंदोलनकारियों को बसों में **निःशुल्क यात्रा** की सुविधा दी जा रही है।

🏆 अध्याय 6: झारखण्ड के खेल, खिलाड़ी एवं प्रमुख व्यक्तित्व

1. खेल और खिलाड़ी

- **जयपाल सिंह मुंडा (हॉकी) :**

www.CrackJSSC.com

- इन्होंने 1928 के **एम्स्टर्डम ओलंपिक** में भारतीय हॉकी टीम का नेतृत्व किया था और भारत को **पहला स्वर्ण पदक (Gold Medal)** दिलाया था। इन्हें आदर से 'मरांग गोमके' (महान नेता) कहा जाता है।

- **महेन्द्र सिंह धोनी (क्रिकेट) :**
  - रांची के रहने वाले धोनी की कप्तानी में भारत ने 2007 में टी-20 विश्व कप, 2011 में वनडे विश्व कप और 2013 में आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी जीती। इन्हें राजीव गांधी खेल रत्न, पद्म श्री और पद्म भूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

- **दीपिका कुमारी (तीरंदाजी) :**
  - रांची की प्रसिद्ध तीरंदाज जिन्होंने राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व कप में कई स्वर्ण पदक जीते हैं। वे दुनिया की नंबर वन तीरंदाज भी रह चुकी हैं।

- **अष्टम उरांव (फुटबॉल) :**
  - गुमला की रहने वाली अष्टम उरांव ने फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप में भारतीय टीम की कप्तानी की थी।

2. झारखण्ड के विशिष्ट व्यक्तित्व

- **लांस नायक अल्बर्ट एक्का:**
  - 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में अदम्य साहस दिखाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान **'परमवीर चक्र'** से सम्मानित किया गया। वे झारखण्ड के एकमात्र परमवीर चक्र विजेता हैं।

- **फादर कामिल बुल्के:**
  - बेल्जियम में जन्मे लेकिन झारखण्ड को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले प्रसिद्ध हिंदी और संस्कृत के विद्वान। इन्होंने प्रसिद्ध **'अंग्रेजी-हिंदी कोष' (Dictionary)** तैयार की थी। इन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

---

www.GradJSSC.com

अध्याय 7: झारखण्ड के प्राचीन एवं मध्यकालीन क्षेत्रीय राजवंश

झारखण्ड के पठारी क्षेत्रों में मुगलों और अंग्रेजों के आगमन से पूर्व कई शक्तिशाली क्षेत्रीय राजवंशों का शासन रहा, जिन्होंने यहाँ की राजनैतिक और सांस्कृतिक पहचान को आकार दिया।

1. मुंडा राज (झारखण्ड का प्रथम राजवंश)

- **संस्थापक:** मुंडा जनजाति के प्रसिद्ध नेता **रीसा मुंडा** (या रीता मुंडा) को इस क्षेत्र में राज्य निर्माण का श्रेय जाता है।
- **प्रथम शासक:** रीसा मुंडा ने **सुतिया पाहन** को मुंडाओं का शासक चुना। सुतिया पाहन ने अपने राज्य का नाम **'सुतिया नागखंड'** रखा था।
- **प्रशासनिक विभाजन:** सुतिया नागखंड को **7 गढ़ों** (लोहरदगा, हजारीबाग, पालून, सिंहभूम, मानभूम, सुरगुजा और केसलगढ़) तथा 21 परगनों में विभाजित किया गया था।

2. छोटानागपुर का नागवंश

- **स्थापना:** नागवंश की स्थापना **10वीं शताब्दी (64 ईस्वी)** के आसपास मानी जाती है।
- **संस्थापक: फणि मुकुट राय** को नागवंश का 'आदि पुरुष' कहा जाता है। उन्होंने अपनी राजधानी **सुतियाम्बे** (रांची के निकट) को बनाया।
- **महत्वपूर्ण शासक एवं राजधानियाँ:** नागवंशी राजाओं ने सुरक्षा और राजनैतिक कारणों से समय-समय पर अपनी राजधानियाँ बदलीं, जहाँ से JSSC सीधे प्रश्न पूछता है:
  - **फणि मुकुट राय:** सुतियाम्बे
  - **प्रताप राय:** चुटिया (सुवर्णरेखा नदी के तट पर)
  - **भीम कर्ण:** खुखरा (इन्होंने 'भीम सागर' तालाब का निर्माण कराया था)
  - **दुर्जन साल:** दोइसा (इन्होंने नवरत्न गढ़ नामक पाँच मंजिला महल बनवाया था)
  - **यदुनाथ शाह:** पालकोट
  - **जगन्नाथ शाहदेव:** रातूगढ़ (रांची)

3. पलामू का चेरो राजवंश

- **स्थापना:** 16वीं शताब्दी में **भागवत राय** ने रखशेल वंश के शासकों को पराजित करके चेरो वंश की नींव रखी।
- **प्रतापी राजा (मेदिनी राय):** राजा **मेदिनी राय** को चेरो वंश का सबसे महान शासक माना जाता है। उनके शासनकाल को **"चेरो शासन का स्वर्ण युग"** कहा जाता है।
- **पलामू का नया किला:** मेदिनी राय ने ही पलामू के नए किले का निर्माण करवाया था और उसमें नागपुरी फाटक (दरवाजा) लगवाया था, जिसे वे नागवंशी राजा दुर्जन साल को हराकर दोइसा से लूटकर लाए थे।

---

www.CrackJSSC.com

🗺 अध्याय 8: झारखण्ड के प्रमुख धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थल

झारखण्ड अपनी प्राकृतिक सुंदरता, झरनों और प्राचीन मंदिरों के लिए दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित करता है।

1. प्रमुख धार्मिक स्थल

- **वैद्यनाथ धाम (देवघर) :**
  - यह भारत के **12 ज्योतिर्लिंगों** में से एक है और इसे 'कामना लिंग' भी कहा जाता है।
  - **निर्माण :** इस भव्य मंदिर का निर्माण गिद्धौर राजवंश के 10वें राजा **पूरनमल** द्वारा करवाया गया था।
  - **विशेषता :** यहाँ प्रतिवर्ष सावन के महीने में विश्व का सबसे लंबा चलने वाला **'श्रावणी मेला'** लगता है।
- **छिन्नमस्तिका मंदिर (रजरप्पा, रामगढ़) :**
  - यह मंदिर **दामोदर और भेड़ा (भैरवी) नदियों के संगम** पर स्थित है।
  - यह एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है, जहाँ देवी काली की धड़ से अलग सिर वाली प्रतिमा स्थापित है। यह तांत्रिक साधना का प्रमुख केंद्र है।
- **बासुकीनाथ धाम (दुमका) :**
  - देवघर आने वाले श्रद्धालु बासुकीनाथ की यात्रा के बिना अपनी पूजा अधूरी मानते हैं। इस मंदिर का निर्माण **हरि सिंह** नामक एक कथावाचक ने करवाया था।
- **भद्रकाली मंदिर (इटखोरी, चतरा) :**
  - यहाँ माँ भद्रकाली की प्रतिमा के साथ-साथ बौद्ध और जैन धर्म के अवशेष भी मिले हैं। इसे **तीनों धर्मों (हिन्दू, बौद्ध, जैन) का संगम स्थल** माना जाता है।

2. प्रमुख प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थल

- **पारसनाथ पहाड़ी (सम्मेद शिखर - गिरिडीह) :**
  - यह झारखण्ड की **सबसे ऊँची चोटी** है, जिसकी ऊँचाई **1365 मीटर (4431 फीट)** है।
  - **धार्मिक महत्व :** यह जैन धर्म का मक्का कहलाता है। जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से **20 तीर्थंकरों** ने इसी पहाड़ी पर मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त किया था। 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के नाम पर ही इसका नाम पारसनाथ पड़ा।
- **नेतरहाट (लातेहार) :**
  - इसे **"छोटानागपुर की रानी"** (Queen of Chhotanagpur) कहा जाता है। यह राज्य का सबसे ठंडा और सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान है। यहाँ का 'सनराइज' (सूर्योदय) और 'सनसेट' (सूर्यास्त) पॉइंट (मैग्नोलिया पॉइंट) बेहद प्रसिद्ध है।
- **पतरातू घाटी (रामगढ़) :**

www.crackJSSC.com

- अपनी घुमावदार हरी-भरी सड़कों और सुंदर पतरातू डैम के कारण इसे झारखण्ड का 'शिमला' या प्राकृतिक जन्नत भी कहा जाता है।

---

www.CrackJSSC.com

अध्याय 9: झारखण्ड की भाषाएँ एवं प्रमुख साहित्य

झारखण्ड भाषाई विविधता से समृद्ध है। यहाँ की भाषाओं को मुख्य रूप से तीन परिवारों में विभाजित किया जाता है:

1. भाषाई परिवारों का वर्गीकरण

1. **ऑस्ट्रो-एशियाटिक (मुंडा) भाषा परिवार**: इसके अंतर्गत **संताली, मुंडारी, हो, खड़िया** और कोरवा भाषाएँ आती हैं।
2. **द्रविड़ भाषा परिवार**: इसके अंतर्गत उरांव जनजाति द्वारा बोली जाने वाली **'कुड़ुख'** और सौरिया पहाड़िया द्वारा बोली जाने वाली **'मालतो'** भाषा आती है।
3. **भारोपीय (इंडो-आर्यन) भाषा परिवार**: इसके अंतर्गत राज्य की गैर-जनजातीय भाषाएँ (सदानों की भाषा) आती हैं, जिन्हें **'सदाणी भाषा'** कहा जाता है। इसमें **नागपुरी, खोरठा, कुरमाली** और पंचपरगनिया शामिल हैं।

2. महत्वपूर्ण साहित्यिक तथ्य एवं लिपियाँ

- **ओलचिकी लिपि**: संताली भाषा की प्रामाणिक लिपि **'ओलचिकी'** है, जिसका आविष्कार **पंडित रघुनाथ मुर्मू** ने वर्ष 1941 में किया था। 92वें संविधान संशोधन (2003) द्वारा संताली को संविधान की **8वीं अनुसूची** में शामिल किया गया था।
- **वरंग चिति लिपि**: यह **'हो'** भाषा की लिपि है, जिसका आविष्कार **लोको बोदरा** ने किया था।
- **प्रसिद्ध पुस्तकें**:
  - *"गायों को चराने वाला"* और *"सोनुआ का संघर्ष"* जैसी आंचलिक रचनाएँ यहाँ के इतिहास को दर्शाती हैं।
  - नागपुरी भाषा का पहला व्याकरण **'नोट्स ऑन द ग्वारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा'** (1896) ई.एच. ह्विटली द्वारा लिखा गया था।

---

www.crackssc.com

🏛 अध्याय 10: झारखण्ड की प्रशासनिक एवं राजनैतिक व्यवस्था

झारखण्ड में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 152-237 के तहत संसदीय लोकतांत्रिक प्रशासनिक ढांचा लागू है। राज्य की एकसदनीय (Unicameral) विधायिका है।

1. राजनैतिक संरचना एवं सीटें

- **विधानसभा सीटों की संख्या**: झारखण्ड विधानसभा में कुल **81 निर्वाचित सीटें** हैं। (पहले 1 मनोनीत एंग्लो-इंडियन सीट होती थी, जिसे 104वें संविधान संशोधन द्वारा समाप्त कर दिया गया)।
  - **अनुसूचित जनजाति (ST) के लिए आरक्षित**: 28 सीटें
  - **अनुसूचित जाति (SC) के लिए आरक्षित**: 09 सीटें
  - **अनारक्षित (General)**: 44 सीटें
- **संसद में प्रतिनिधित्व**: झारखण्ड से कुल **20 सांसद** चुने जाते हैं:
  - **लोकसभा सीटें**: 14 (ST-5, SC-1, General-8)
  - **राज्यसभा सीटें**: 06
- **सबसे बड़ा और छोटा संसदीय क्षेत्र**:
  - क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा लोकसभा क्षेत्र **पश्चिमी सिंहभूम** (ST आरक्षित) है।
  - सबसे छोटा लोकसभा क्षेत्र **चतरा** है।

2. प्रशासनिक विभाजन (प्रमंडल और जिले)

राज्य गठन के समय झारखण्ड में **4 प्रमंडल (Divisions) और 18 जिले** थे। वर्तमान में राज्य में **5 प्रमंडल और 24 जिले** हैं।

प्रमंडल का नाम	मुख्यालय	जिलों की संख्या	शामिल जिले
उत्तरी छोटानागपुर	हजारीबाग	07 (सबसे बड़ा)	हजारीबाग, रामगढ़, कोडरमा, चतरा, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह
दक्षिणी छोटानागपुर	रांची	05	रांची, खूंटी, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा
संथाल परगना	दुमका	06	दुमका, देवघर, गोड्डे, साहेबगंज, पाकुड़, जामताड़ा
पलामू	मेदिनीनगर	03	पलामू, गढ़वा, लातेहार
कोल्हान	चाईबासा	03 (नवीनतम)	पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां

www.CrackJSSC.com

अध्याय 11: राज्य गठन के बाद नए बने जिलों का क्रमिक इतिहास

15 नवंबर 2000 को झारखण्ड के गठन के बाद समय-समय पर प्रशासनिक आवश्यकताओं के लिए **6 नए जिलों** का निर्माण किया गया:

1. **लातेहार (19वाँ जिला) :** 4 अप्रैल 2001 को पलामू जिले से अलग होकर बना।
2. **जामताड़ा (20वाँ जिला) :** 26 अप्रैल 2001 को दुमका जिले से अलग होकर बना।इसे 'साइबर कैपिटल' भी कहा जाता है।
3. **सिमडेगा (21वाँ जिला) :** 30 अप्रैल 2001 को गुमला जिले से अलग होकर बना। इसे झारखण्ड का 'नर्सरी ऑफ हॉकी' कहते हैं।
4. **सरायकेला-खरसावां (22वाँ जिला) :** 30 अप्रैल 2001 को पश्चिमी सिंहभूम से अलग होकर बना। यह छऊ नृत्य का उद्गम स्थल है।
5. **खूंटी (23वाँ जिला) :** 12 सितंबर 2007 को रांची से अलग होकर बना। यह भगवान बिरसा मुंडा की जन्मभूमि है।
6. **रामगढ़ (24वाँ जिला) :** 12 सितंबर 2007 को हजारीबाग से अलग होकर बना। यह क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का **सबसे छोटा जिला** है।

---

www.CrackJSSC.com

अध्याय 12: झारखण्ड के राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभ्यारण्य (Flora & Fauna)

झारखण्ड अपनी जैव विविधता के लिए जाना जाता है। यहाँ राष्ट्रीय स्तर का केवल **1 राष्ट्रीय उद्यान (National Park)** और **11 वन्यजीव अभ्यारण्य (Wildlife Sanctuaries)** हैं।

1. बेतला राष्ट्रीय उद्यान (Betla National Park)

- **अवस्थिति**: लातेहार और पलामू जिले की सीमा पर स्थित है।
- **स्थापना वर्ष**: 1986 ई.।
- **विशेष गौरव**: वर्ष **1932 में विश्व की पहली बाघ गणना (Tiger Census)** इसी वन्य क्षेत्र में की गई थी।
- **पलामू टाइगर रिजर्व**: यह भारत के शुरुआती बाघ आरक्षित क्षेत्रों में से एक है, जो इसी उद्यान का हिस्सा है।

2. प्रमुख वन्यजीव अभ्यारण्य (Wildlife Sanctuaries)

- **दलमा वन्यजीव अभ्यारण्य (पूर्वी सिंहभूम)**:
  - **स्थापना**: 1976 ई.।
  - **विशेषता**: यह मुख्य रूप से **हाथियों के संरक्षण** के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ वर्ष 1992 में भारत सरकार द्वारा 'गज परियोजना' (Project Elephant) की शुरुआत की गई थी।
- **हजारीबाग वन्यजीव अभ्यारण्य (हजारीबाग)**:
  - **स्थापना**: 1955 ई. (राज्य के सबसे पुराने अभ्यारण्यों में से एक)। यहाँ मुख्य रूप से तेंदुआ, सांभर और चीतल पाए जाते हैं।
- **तोपचांची अभ्यारण्य (धनबाद)**:
  - **स्थापना**: 1978 ई.। इसके मध्य में एक खूबसूरत झील स्थित है जिसे **'हरि पहाड़'** कहा जाता है।
- **उधवा झील पक्षी विहार (साहेबगंज)**:
  - **स्थापना**: 1991 ई.। यह झारखण्ड का एकमात्र पक्षी अभ्यारण्य है, जहाँ सर्दियों में साइबेरिया सहित अन्य विदेशी प्रवासी पक्षी आते हैं।
- **पारसनाथ अभ्यारण्य (गिरिडीह)**:
  - **स्थापना**: 1981 ई.। यह पारसनाथ पहाड़ी के चारों ओर विस्तृत है।
- **गौतम बुद्ध अभ्यारण्य (कोडरमा)**:
  - **स्थापना**: 1976 ई.। यह बिहार की सीमा से सटा हुआ है।
- **महुआडांड़ भेड़िया अभ्यारण्य (लातेहार)**:

www.CrackSSC.com

- **स्थापना :** 1976 ई.। यह भारत का एकमात्र अभ्यारण्य है जो विशेष रूप से **'भेड़िए' (Chiku/Wolf)** के संरक्षण के लिए बनाया गया है।

---

www.CrackJSSC.com

अध्याय 13: झारखण्ड का अपवाह तंत्र (नदियाँ, जलप्रपात एवं गर्म जलकुंड)

झारखण्ड की नदियाँ मुख्य रूप से बरसाती हैं, जो गर्मियों में सूख जाती हैं। सोन नदी को छोड़कर झारखण्ड की कोई भी नदी नाव चलाने योग्य नहीं है।

1. प्रमुख नदियाँ और उनकी विशेषताएँ

- **दामोदर नदी (Deoghar/Latehar):**
  - **उद्गम:** टोरी, लातेहार (छोटा नागपुर पठार)।
  - **मुहाना:** हुगली नदी (पश्चिम बंगाल)।
  - **कुल लम्बाई:** 592 किमी (झारखण्ड में 290 किमी)।
  - **उपनाम:** इसे **'देव नदी'** और **'बंगाल का शोक'** भी कहा जाता है। यह झारखण्ड की सबसे लम्बी और सबसे प्रदूषित नदी है।
  - **सहायक नदियाँ:** बराकर, बोकारो, कोनार, भेड़ा।
- **स्वर्णरेखा नदी:**
  - **उद्गम:** नगड़ी, रांची।
  - **विशेषता:** यह झारखण्ड की एकमात्र नदी है जो स्वतंत्र रूप से **बंगाल की खाड़ी** में गिरती है। इस नदी की रेत में सोने के कण पाए जाते हैं।
  - **सहायक नदियाँ:** राढ़ू, कांची, खरकई।
- **बराकर नदी:**
  - **उद्गम:** छोटा नागपुर का पठार (हजारीबाग)।
  - **महत्व:** दामोदर घाटी परियोजना (DVC) के तहत इस नदी पर **मैथन डैम** और **तिलैया डैम** बनाए गए हैं।
- **सोन नदी:**
  - **उद्गम:** अमरकंटक की पहाड़ी (मध्य प्रदेश)।
  - **विशेषता:** यह झारखण्ड के उत्तर-पश्चिमी भाग (गढ़वा और पलामू) की सीमा बनाती हुई गंगा नदी में मिल जाती है। यह बारहमासी नदी है।

www.CrackSSC.com

2. झारखण्ड के प्रमुख जलप्रपात (Waterfalls)

- **बूढ़ाघाघ / लोध जलप्रपात (लातेहार) :**
  - यह झारखण्ड का **सबसे ऊँचा जलप्रपात** है। इसकी ऊँचाई लगभग **143 मीटर (469 फीट)** है। यह बूढ़ा नदी पर स्थित है।
- **हुंडरू जलप्रपात (रांची) :**
  - यह **स्वर्णरेखा नदी** पर स्थित है और राज्य का दूसरा सबसे ऊँचा (98 मीटर) जलप्रपात है।
- **दशम जलप्रपात (रांची) :**
  - यह कांची नदी पर स्थित है। यहाँ 10 धाराओं में पानी गिरने के कारण इसे दशम कहा जाता है।
- **जोन्हा / गौतमधारा जलप्रपात (रांची) :**
  - यह राढ़ू नदी पर स्थित है। मान्यता है कि यहाँ भगवान बुद्ध ने स्नान किया था।

3. प्रमुख गर्म जलकुंड (Hot Springs)

झारखण्ड के गर्म जलकुंडों में खनिज लवण और गंधक (सल्फर) पाया जाता है, जिससे चर्म रोग ठीक होते हैं।

- **सूरजकुंड (हजारीबाग) :** यह भारत का सबसे गर्म जलकुंड है। इसका तापमान लगभग **88.5°C (190°F)** रहता है।
- **तातोई और दुमारी (दुमका) :** भुरभुरी नदी के तट पर स्थित प्रमुख गर्म जलकुंड।
- **कावा (हजारीबाग) :** हजारीबाग जिले में स्थित एक अन्य महत्वपूर्ण जलकुंड।

---

www.CrackSSC.com

💰 अध्याय 14: झारखण्ड का बजट एवं आर्थिक परिदृश्य (2025-2026/2026)

(नोट: जेएसएससी परीक्षा के लिए वर्तमान वित्तीय वर्ष के आर्थिक आंकड़े और नीतियां अत्यंत महत्वपूर्ण हैं)

- **राजकोषीय ढांचा**: झारखण्ड की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से खनन, विनिर्माण (Manufacturing) और कृषि पर आधारित है।
- **प्रमुख नीतियां**: राज्य सरकार वर्तमान में **'झारखण्ड औद्योगिक और निवेश प्रोत्साहन नीति'** के तहत निवेश आकर्षित कर रही है।
- **कृषि ऋण माफी योजना**: इसके तहत राज्य के सीमांत किसानों के ₹2 लाख तक के कृषि ऋण को माफ करने का प्रावधान किया गया है।
- **सर्वजन पेंशन योजना**: राज्य के सभी वृद्धों, विधवाओं और दिव्यांगों को सार्वभौमिक रूप से प्रति माह वित्तीय सहायता दी जा रही है, जिसमें अब उम्र सीमा को घटाकर कुछ वर्गों के लिए 50 वर्ष कर दिया गया है।

---

www.CrackJSSC.com

🏆 अध्याय 15: झारखण्ड के पुरस्कार, नागरिक उपलब्धियाँ एवं गौरव

झारखण्ड के नागरिकों ने कला, खेल, समाज सेवा और सेना में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्य का नाम रोशन किया है।

1. पद्म पुरस्कार विजेता (प्रमुख व्यक्तित्व)

- **डॉ. राम दयाल मुंडा (कला/साहित्य) :** इन्हें जनजातीय संस्कृति और कला में योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी और **पद्म श्री (2010)** से सम्मानित किया गया था। वे रांची विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।
- **महेन्द्र सिंह धोनी :** खेल के क्षेत्र में शानदार योगदान के लिए **पद्म श्री (2009)** और **पद्म भूषण (2018)**।
- **छुटनी महतो (सामाजिक कार्य) :** डैण प्रथा (Witch-hunting) के खिलाफ समाज में अलख जगाने और पीड़ित महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए इन्हें वर्ष 2021 में **पद्म श्री** से सम्मानित किया गया था।
- **पूर्णिमा महतो (खेल) :** तीरंदाजी में उत्कृष्ट प्रशिक्षण देने के लिए इन्हें प्रतिष्ठित **द्रोणाचार्य पुरस्कार** से सम्मानित किया जा चुका है।

2. नागरिक उपलब्धियाँ और कीर्तिमान

- **एवरेस्ट फतह :** जमशेदपुर की **प्रेमलता अग्रवाल** 48 वर्ष की उम्र में माउंट एवरेस्ट पर फतह करने वाली सबसे उम्रदराज भारतीय महिला बनी थीं। इन्हें पद्म श्री और तेनजिंग नोर्गे राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार मिला है।
- **तीरंदाजी का वैश्विक केंद्र :** सरायकेला और जमशेदपुर की तीरंदाजी अकादमियों ने देश को दीपिका कुमारी, कोमालिका बारी और अंकिता भगत जैसे विश्व स्तरीय खिलाड़ी दिए हैं जिन्होंने तीरंदाजी विश्व कप में स्वर्ण पदक जीते हैं।

---

www.CrackSSC.com

👥 अध्याय 16: झारखण्ड की जनजातियाँ एवं उनकी शासन व्यवस्था

झारखण्ड में कुल **32 अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes)** निवास करती हैं। वर्ष 2022 में भारत सरकार द्वारा **'पुराण'** जनजाति को भी इसमें शामिल करने की स्वीकृति दी गई, जिसके बाद कुल संख्या **33** हो गई है। राज्य की कुल आबादी का लगभग **26.2%** हिस्सा जनजातीय आबादी का है। इनमें से **8 जनजातियों को आदिम जनजाति (Primitive Tribal Groups - PTG)** की श्रेणी में रखा गया है (असुर, बिरहोर, बिराजिया, कोरवा, परहिया, सबर, माल पहाड़िया और सौरिया पहाड़िया)।

---

1. संथाल जनजाति (झारखण्ड की सबसे बड़ी जनजाति)

- **जनसंख्या की दृष्टि से:** यह झारखण्ड की **प्रथम** और भारत की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। इनका मुख्य निवास स्थान **संथाल परगना** क्षेत्र है।
- **प्रजातीय समूह:** ये **प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड (Proto-Australoid)** समूह से संबंधित हैं।
- **गोत्र व्यवस्था:** संथाल समाज **12 गोत्रों (किली)** में विभाजित है (जैसे - मुर्मू, हांसदा, सोरेन, हेम्ब्रम, टुडू, किसकू आदि)।
- **विवाह प्रथा:** इनमें विवाह को **'बापला'** कहा जाता है। सबसे प्रचलित विवाह **'किरिंग बापला'** है, जो माता-पिता की सहमति से होता है। वधु-मूल्य को **'पोन'** कहा जाता है।
- **धार्मिक व्यवस्था:** इनके सर्वोच्च देवता **'सिंहबोंगा' (सूर्य)** या **'मरांग बुरु'** हैं। इनके धार्मिक प्रधान को **'नायके'** कहा जाता है।
- **मांझी परगना शासन व्यवस्था:** संथालों की पारंपरिक शासन व्यवस्था को 'मांझी परगना व्यवस्था' कहते हैं:
  - **मांझी:** गाँव का प्रधान होता है, जो प्रशासनिक और न्यायिक निर्णय लेता है।
  - **जोग मांझी:** मांझी का सहायक, जो युवाओं के आचरण और विवाह संबंधी मामलों की देखरेख करता है।
  - **परगनैत:** 15-20 गाँवों को मिलाकर एक 'परगना' बनता है, जिसके प्रधान को परगनैत कहते हैं। यह अंतर-ग्राम विवादों का निपटारा करता है।

---

2. उरांव जनजाति (झारखण्ड की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति)

- **जनसंख्या की दृष्टि से:** यह झारखण्ड की **दूसरी** सबसे बड़ी जनजाति है।
- **विशेषता:** यह झारखण्ड की **सबसे शिक्षित और जागरूक** जनजाति मानी जाती है।
- **प्रजातीय एवं भाषाई समूह:** ये **द्रविड़ (Dravidian)** समूह से संबंधित हैं और इनकी भाषा **'कुड़ुख'** है।
- **धूमकुड़िया (युवागृह):** उरांव जनजाति की सबसे प्रमुख सामाजिक संस्था इनका युवागृह है जिसे **'धूमकुड़िया'** कहा जाता है। यहाँ युवक-युवतियों को जनजातीय रीति-रिवाजों और संस्कृति का प्रशिक्षण दिया जाता है। युवकों के लिए 'जोख-एड़पा' और युवतियों के लिए 'पेल-एड़पा' होता है।

www.CrackJSSC.com

- **धार्मिक व्यवस्था**: इनके मुख्य देवता **'धर्मेश' (सूर्यरूपी भगवान)** हैं। इनके धार्मिक गुरु या पुजारी को **'पाहन'** कहा जाता है।
- **पड़हा पंचायत शासन व्यवस्था**:
  - **महतो**: उरांव गाँव का मुख्य प्रशासनिक प्रधान होता है।
  - **पाहन**: गाँव का धार्मिक प्रधान होता है। (कहावत है: *"पाहन गाँव को बनाता है, महतो गाँव को चलाता है"*)।
  - **पड़हा राजा**: कई गाँवों (7, 12, 21 या 22 गाँवों) को मिलाकर 'पड़हा' बनता है, जिसके प्रमुख को पड़हा राजा कहा जाता है।

---

3. मुंडा जनजाति (झारखण्ड की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति)

- **जनसंख्या की दृष्टि से**: यह झारखण्ड की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। यह जनजाति **केवल झारखण्ड** में ही पाई जाती है।
- **भाषा**: इनकी भाषा **'मुंडारी'** है, जो ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार में आती है।
- **प्रमुख स्थल**:
  - **अखड़ा**: गाँव के बीच में स्थित वह स्थान जहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य और बैठकें होती हैं।
  - **सासन**: वह स्थान जहाँ मुंडा जनजाति के मृतकों की अस्थियाँ दफनाई जाती हैं। यहाँ रखे जाने वाले पत्थर के स्मारकों को **'सासन-दीरी'** कहा जाता है।
- **गीतिओरा**: यह मुंडा जनजाति का पारंपरिक **युवागृह** है।
- **मुंडा-मानकी शासन व्यवस्था (पड़ा पंचायत)**:
  - **हातू मुंडा**: मुंडा गाँव के प्रधान को 'मुंडा' या 'हातू मुंडा' कहा जाता है।
  - **पड़ा राजा**: कई गाँवों को मिलाकर 'पड़ा पंचायत' बनती है, जिसका सर्वोच्च अधिकारी पड़ा राजा होता है।

---

4. हो जनजाति (झारखण्ड की चौथी सबसे बड़ी जनजाति)

- **मुख्य निवास**: इनका मुख्य संकेंद्रण **कोल्हान प्रमंडल** (पूर्वी व पश्चिमी सिंहभूम) में है।
- **लिपि**: इनकी प्रामाणिक लिपि **'वरंग चिति'** है।
- **विवाह**: इनमें 'अंडी' और 'ओपोरतीपी' विवाह अत्यधिक प्रचलित हैं। वधु-मूल्य को **'गोनाँग'** कहा जाता है।
- **मुंडा-मानकी शासन व्यवस्था**: कोल्हान क्षेत्र की इस शासन व्यवस्था को थॉमस विल्किंसन के समय (1837 में) **विल्किंसन रूल** के तहत कानूनी मान्यता मिली थी:

www.CrackJSSC.com

- **मुंडा**: गाँव का प्रधान होता है जो कर (Tax) वसूलता है और शांति व्यवस्था बनाए रखता है।
- **मानकी**: 15-20 मुंडा गाँवों के ऊपर एक 'मानकी' होता है, जो पीढ़ (Peer) का प्रधान होता है और बड़े विवादों को सुलझाता है।

---

www.CrackJSSC.com

🏭 अध्याय 17: झारखण्ड के लघु एवं कुटीर उद्योग तथा औद्योगिक नीतियां

भारी उद्योगों के अलावा झारखण्ड में ग्रामीण रोजगार को बढ़ावा देने के लिए लघु और हस्तशिल्प उद्योगों का जाल बिछाया गया है।

- **झारक्राफ्ट (Jharkraft):**
  - **स्थापना :** वर्ष **2006** में की गई।
  - **उद्देश्य :** रेशम (Tassar Silk), हथकरघा (Handloom) और हस्तशिल्प के विकास के माध्यम से ग्रामीण कारीगरों को रोजगार देना।
  - **गौरव :** झारखण्ड भारत में **तसर रेशम (Tassar Silk)** के उत्पादन में **पहले स्थान** पर है। देश के कुल तसर उत्पादन का लगभग 60% से अधिक हिस्सा यहीं से आता है।
- **लाह उद्योग (Lac Industry):**
  - झारखण्ड देश का सबसे बड़ा लाह उत्पादक राज्य है। रांची के **नामकुम** में 'भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान' (IINRG - पुराना नाम भारतीय लाह अनुसंधान संस्थान, स्थापना 1924) स्थित है।

www.CrackJSSC.com

अध्याय 18: झारखण्ड की मिट्टी एवं कृषि व्यवस्था (Soil and Agriculture)

झारखण्ड की स्थलाकृति मुख्य रूप से पठारी है, इसलिए यहाँ की कृषि व्यवस्था मैदानी राज्यों से काफी भिन्न है। यहाँ की लगभग 70-75% जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है।

1. झारखण्ड की मिट्टियों का वर्गीकरण

झारखण्ड के भू-गर्भिक संरचना के कारण यहाँ मुख्य रूप से **6 प्रकार की मिट्टियाँ** पाई जाती हैं:

- **लाल मिट्टी (Red Soil):**
  - **विस्तार:** यह झारखण्ड की **सर्वप्रमुख मिट्टी** है, जो राज्य के लगभग **90% भाग** पर पाई जाती है। छोटानागपुर पठार के अधिकांश हिस्सों में यही मिट्टी मिलती है।
  - **विशेषता:** यह नीस और ग्रेनाइट चट्टानों के अवशेषों से बनी है। लौह अयस्क (Iron) की अधिकता के कारण इसका रंग लाल होता है। यह नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और ह्यूमस की कमी के कारण कम उपजाऊ होती है। इसमें मुख्य रूप से बाजरा, मक्का और कोदो जैसे मोटे अनाज उगाए जाते हैं।
- **काली मिट्टी (Black / Regur Soil):**
  - **विस्तार:** यह मुख्य रूप से **राजमहल ट्रैप** (साहेबगंज, पाकुड़) के क्षेत्र में पाई जाती है।
  - **विशेषता:** इसका निर्माण बेसाल्ट चट्टानों के टूटने-फूटने से हुआ है। यह मिट्टी **धान और चने की खेती** के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है।
- **लैटराइट मिट्टी (Laterite Soil):**
  - **विस्तार:** यह पाठ क्षेत्र (लोहरदगा, गुमला), राजमहल पहाड़ियों के पूर्वी भाग और पूर्वी सिंहभूम के कुछ हिस्सों में पाई जाती है।
  - **विशेषता:** गहरे लाल रंग की यह मिट्टी कंकड़ीली होती है और इसमें कृषि कार्य कठिन होता है। यहाँ मुख्य रूप से मोटे अनाज और आलू की खेती होती है।
- **जलोढ़ मिट्टी (Alluvial Soil):**
  - **विस्तार:** यह झारखण्ड के सबसे उत्तरी हिस्से यानी **साहेबगंज** (गंगा नदी का तटीय क्षेत्र) और **पाकुड़** में पाई जाती है।
  - **विशेषता:** यह राज्य की सबसे **नवीनतम और उपजाऊ** मिट्टी है। साहेबगंज के उत्तरी भाग में खादर (नवीन जलोढ़) और बांगर (पुरानी जलोढ़) दोनों पाई जाती हैं, जो धान और गेहूँ के लिए सर्वोत्तम हैं।

www.crackjssc.com

2. झारखण्ड की कृषि व्यवस्था

- **मुख्य फसल**: झारखण्ड की सर्वप्रमुख फसल **धान (Rice)** है। राज्य के कुल कृषि क्षेत्र के लगभग 60% से अधिक भाग पर धान की खेती होती है।
- **दूसरी मुख्य फसल**: **मक्का (Maize)** राज्य की दूसरी सबसे प्रमुख फसल है, जिसका सर्वाधिक उत्पादन पलामू जिले में होता है।
- **कृषि की प्रकृति**: झारखण्ड में कृषि मुख्य रूप से **मानसून पर आधारित (बरसाती)** है। यहाँ केवल 12-13% भूमि पर ही सिंचाई की स्थायी सुविधा उपलब्ध है। कुएँ झारखण्ड में सिंचाई के सबसे प्रमुख साधन हैं (विशेषकर गुमला और गिरिडीह जिलों में)।

---

www.CrackJSSC.com

🏰 अध्याय 19: झारखण्ड के प्रमुख ऐतिहासिक किले एवं इमारतें

झारखण्ड के विभिन्न राजाओं और नवाबों द्वारा निर्मित किले यहाँ की स्थापत्य कला और सामरिक इतिहास के गवाह हैं।

- **पलामू का किला (लातेहार) :**
  - **स्थान :** यह किला बेतला राष्ट्रीय उद्यान के पास औरंगा नदी के तट पर स्थित है।
  - **विशेषता :** यहाँ दो किले हैं – 'पुराना किला' और 'नया किला'। पुराने किले का निर्माण चेरो राजा **प्रताप राय** ने कराया था, जबकि नए किले का निर्माण सबसे प्रतापी चेरो राजा **मेदिनी राय** ने कराया था। नए किले का मुख्य आकर्षण इसका **नागपुरी दरवाजा** है, जो अपनी नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है।
- **शाहपुर का किला (पलामू) :**
  - इसका निर्माण चेरो राजा **गोपाल राय** ने 1772 ई. में करवाया था। यह कोयल नदी के तट पर स्थित है।
- **नवरत्नगढ़ का महल (गुमला) :**
  - इसका निर्माण नागवंशी राजा **दुर्जन साल** ने कराया था जब वे मुगलों की कैद (ग्वालियर किले) से आजाद होकर लौटे थे। यह एक पाँच मंजिला महल था, जिसके प्रत्येक तल पर 9 कमरे थे। इसे झारखण्ड का 'हम्पी' भी कहा जाता है।
- **नारायणपुर का किला (लातेहार) :**
  - इस किले का निर्माण चेरो राजा के सेनापति **भगवत राय** के समय हुआ था। इसे 'नवागढ़ का किला' भी कहा जाता है।
- **रातो का किला (रांची) :**
  - इसका निर्माण नागवंशी राजाओं द्वारा कराया गया था। यह वर्तमान में भी काफी सुरक्षित स्थिति में है और यहाँ की वास्तुकला ब्रिटिश शैली से प्रभावित दिखती है।

---

www.CrackSSC.com

शासक अध्याय 20: राष्ट्रीय आन्दोलन एवं स्वतंत्रता संग्राम में झारखण्ड की महिलाओं का योगदान

झारखण्ड का स्वतंत्रता इतिहास केवल पुरुषों के संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि यहाँ की वीरांगनाओं ने भी अंग्रेजों के दाँत खट्टे किए थे।

- **फुलो और झानो मुर्मू (संथाल हूल – 1855):**
  - ये अमर शहीद सिद्धू-कान्हू और चांद-भैरव की बहनें थीं। 1855 के संथाल विद्रोह में इन्होंने न केवल महिलाओं को संगठित किया, बल्कि हाथ में तलवार और टांगी लेकर ब्रिटिश छावनियों पर हमला किया और वीरगति प्राप्त की।
- **सरस्वती देवी (हजारीबाग) :**
  - ये झारखण्ड में राष्ट्रीय आंदोलन (विशेषकर असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह) का नेतृत्व करने वाली सबसे प्रमुख महिला थीं। इन्हें 1930 में नमक कानून तोड़ने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। ये झारखण्ड से जेल जाने वाली शुरुआती महिलाओं में से एक थीं।
- **महादेवी केजरीवाल (दुमका) :**
  - इन्होंने संथाल परगना क्षेत्र में महात्मा गांधी के विचारों का प्रचार-प्रसार किया। 1942 के **भारत छोड़ो आंदोलन** में इन्होंने दुमका में विशाल जुलूस का नेतृत्व किया और ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार की गईं।
- **शैलबाला राय (संथाल परगना) :**
  - नमक सत्याग्रह (1930) के दौरान इन्होंने देवघर और दुमका के क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई। इन्होंने महिलाओं को नमक बनाने और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के लिए प्रेरित किया था।
- **जिगी मुंडा (टाना भगत आंदोलन) :**
  - जतरा टाना भगत के नेतृत्व में शुरू हुए 'टाना भगत आंदोलन' (1914) में जिगी मुंडा और अन्य टाना महिला अनुयायियों ने पूरी निष्ठा से भाग लिया। इन्होंने गांधीजी के अहिंसक आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और खादी का प्रचार किया।

---

www.CrackSSC.com

🎭 अध्याय 21: झारखण्ड के प्रमुख लोकनाट्य (Folk Drama)

झारखण्ड के लोकनाट्य ग्रामीण जीवन की सादगी, सामाजिक ताने-बाने और जनजातीय संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं। ये मुख्य रूप से सार्वजनिक स्थानों (अखड़ा) में रात के समय आयोजित किए जाते हैं।

- **जट-जटिन लोकनाट्य:**
  - **आयोजन समय:** यह नाट्य प्रतिवर्ष **श्रावण से कार्तिक महीने** (मानसून के समय) तक आयोजित किया जाता है।
  - **कथानक:** इसमें कुंवारी लड़कियों द्वारा जट और जटिन के वैवाहिक जीवन, उनके आपसी प्रेम, नोक-झोंक और विरह के प्रसंगों का अभिनय किया जाता है।
- **भकुली-बंका लोकनाट्य:**
  - **आयोजन समय:** यह भी जट-जटिन के साथ ही **श्रावण से कार्तिक माह** के बीच खेला जाता है।
  - **विशेषता:** इसमें 'भकुली' (पत्नी) और 'बंका' (पति) के माध्यम से वैवाहिक जीवन के हास-परिहास को प्रदर्शित किया जाता है। यह लोकनाट्य मूलतः जट-जटिन का ही पूरक माना जाता है।
- **सामा-चकेवा लोकनाट्य:**
  - **आयोजन समय:** यह कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी से पूर्णमासी (कार्तिक पूर्णिमा) तक मनाया और खेला जाता है।
  - **कथानक:** यह **भाई-बहन के पवित्र प्रेम** पर आधारित एक अत्यंत प्रसिद्ध लोकनाट्य है। इसमें मिट्टी के पात्र (खिलौने) बनाए जाते हैं, जिसमें 'सामा' (नायिका/बहन), 'चकेवा' (नायक/भाई) और 'चूड़क' (खलनायक/चुगलखोर) मुख्य पात्र होते हैं। खेल के अंतिम दिन इन मिट्टी की मूर्तियों का विसर्जन कर दिया जाता है।
- **डोमकच लोकनाट्य:**
  - **आयोजन समय:** यह विवाह के अवसरों पर आयोजित होने वाला एक घरेलू लोकनाट्य है।
  - **विशेषता:** जब वर पक्ष के सभी पुरुष बारात लेकर चले जाते हैं, तब घर की महिलाओं द्वारा रात भर जागकर हास्य-व्यंग्य से भरपूर इस नाट्य का प्रदर्शन किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य बारात जाने के बाद सूने घर की सुरक्षा और मनोरंजन सुनिश्चित करना होता है। इसमें पुरुषों का प्रवेश पूरी तरह वर्जित होता है।
- **कीर्तनिया लोकनाट्य:**
  - **कथानक:** यह भगवान **श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं** और उनकी भक्ति पर आधारित होता है। इसमें गायक और नर्तक भक्ति गीतों के माध्यम से कथा का मंचन करते हैं।

www.crackJSSC.com

www.CrackJSSC.com

अध्याय 22: झारखण्ड के प्रमुख लोकगीत (Folk Songs)

झारखण्ड में जीवन के हर उत्सव, ऋतु परिवर्तन और कृषि कार्यों के लिए अलग-अलग लोकगीतों की समृद्ध परंपरा है। यहाँ लोकगीतों को ऋतु-गीत, संस्कार-गीत और पर्व-गीतों में विभाजित किया जाता है।

1. संस्कारों एवं उत्सवों से संबंधित लोकगीत

- **डोमकच गीत**: यह विवाह के अवसर पर वर अथवा कन्या के घर में महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला मुख्य लोकगीत है।
- **झूमर (Jhumar)**: यह झारखण्ड का सबसे लोकप्रिय सामूहिक लोकगीत और नृत्य है। यह मुख्य रूप से सोहराय, करमा, और अन्य त्योहारों के अवसर पर गाया जाता है। इसके दो मुख्य भेद हैं:
    - **जनानी झूमर**: महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला कोमल और मंद गति का गीत।
    - **मर्दाना झूमर**: पुरुषों द्वारा गाया जाने वाला जोश और ऊर्जा से भरपूर गीत।
- **अंगनई (Angnai)**: यह मुख्य रूप से सदानों और जनजातियों में महिलाओं द्वारा घर के आंगन में विभिन्न पूजा-अनुष्ठानों और मांगलिक अवसरों पर गाया जाने वाला गीत है।

2. ऋतुओं एवं कृषि से संबंधित लोकगीत

- **फगुआ (Fagua)**: यह **फागुन (होली)** के महीने में गाया जाने वाला अत्यंत उमंग भरा लोकगीत है। इसमें मुख्य रूप से ढोल, ढाक और मजीरे का प्रयोग किया जाता है।
- **उदासी और पावस**:
    - **उदासी गीत**: यह गर्मी के मौसम (भयानक धूप और सूखे के समय) में गाया जाने वाला एक शांत और वैराग्य रस से भरपूर गीत है।
    - **पावस गीत**: यह वर्षा ऋतु के आगमन के समय (आषाढ़ और सावन के महीने में) किसानों द्वारा खेतों में काम शुरू करते समय गाया जाता है।
- **अधरतिया (Adhratiya)**: जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह मध्य रात्रि (आधी रात) के समय गाए जाने वाले गीतों की श्रेणी है, जो बेहद सुरीले और शांत वातावरण में गाए जाते हैं।

---

www.crackSSC.com

🏛 अध्याय 23: झारखण्ड की बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ

झारखण्ड में बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई, और बिजली उत्पादन (पनबिजली) के उद्देश्य से देश की कुछ सबसे बड़ी नदी घाटी परियोजनाओं की नींव रखी गई थी।

1. दामोदर घाटी परियोजना (Damodar Valley Corporation - DVC)

- **गौरवशाली तथ्य:** यह **स्वतंत्र भारत की पहली बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना** है।
- **स्थापना:** इसकी स्थापना **7 जुलाई 1948** को एक केंद्रीय अधिनियम के तहत की गई थी। इसका मुख्यालय **कोलकाता** में स्थित है।
- **प्रेरणा:** यह परियोजना अमेरिका की प्रसिद्ध **'टेनेंसी घाटी परियोजना' (TVA)** के मॉडल पर आधारित है।
- **सहयोगी राज्य:** यह झारखण्ड और पश्चिम बंगाल की संयुक्त परियोजना है।
- **प्रमुख बाँध (Dams):** इसके तहत दामोदर और उसकी सहायक नदियों पर **8 बड़े बाँध** बनाए गए हैं:
  1. **बराकर नदी पर:** तिलैया बाँध (कोडरमा), मैथन बाँध (धनबाद), और बालपहाड़ी बाँध।
  2. **दामोदर नदी पर:** पंचेत बाँध, अय्यर बाँध, और बेरमो बाँध।
  3. **कोनार नदी पर:** कोनार बाँध (हजारीबाग)।
  4. **बोकारो नदी पर:** बोकारो बाँध।

2. स्वर्णरेखा बहुउद्देशीय परियोजना (Subarnarekha Project)

- **स्थापना:** यह परियोजना **1982-83** में शुरू की गई थी।
- **सहयोगी राज्य:** यह तीन राज्यों – **झारखण्ड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल** की संयुक्त महत्त्वाकांक्षी परियोजना है।
- **वित्तीय सहयोग:** इस परियोजना को **विश्व बैंक (World Bank)** द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की गई है।
- **प्रमुख बाँध एवं जलप्रपात:**
  - इसके तहत स्वर्णरेखा नदी पर **चांडिल बाँध** (सरायकेला-खरसावां) और **गालूडीह बैराज** बनाया गया है।
  - इसकी सहायक खरकई नदी पर **इचा बाँध** और **गाजिया बाँध** का निर्माण किया गया है।
  - इसी परियोजना के तहत रांची के प्रसिद्ध **हुंडरू जलप्रपात** से बिजली का उत्पादन (लगभग 130 मेगावाट) किया जाता है।

www.CrackSSC.com

🎓 अध्याय 24: झारखण्ड के प्रमुख शिक्षण संस्थान (Educational Institutions)

झारखण्ड के प्रमुख तकनीकी, प्रबंधकीय और सामान्य शैक्षणिक संस्थान राज्य की प्रशासनिक परीक्षाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

1. उच्च एवं तकनीकी शिक्षण संस्थान

- **भारतीय खान संस्थान / आईआईटी धनबाद (IIT-ISM Dhanbad):**
  - **स्थापना:** इसकी स्थापना ब्रिटिश काल में **9 दिसंबर 1926** को भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इर्विन द्वारा की गई थी।
  - **स्थान:** धनबाद।
  - **विशेष तथ्य:** वर्ष 2016 में भारत सरकार द्वारा इसे पूर्ण रूप से **आईआईटी (IIT)** का दर्जा प्रदान किया गया। यह खनन इंजीनियरिंग के लिए देश का अग्रणी संस्थान है।
- **बिरला प्रौद्योगिकी संस्थान (BIT Mesra):**
  - **स्थापना:** वर्ष **1955** में उद्योगपति बी. एम. बिरला द्वारा की गई थी।
  - **स्थान:** मेसरा, रांची। इसे देश के शीर्ष मानद विश्वविद्यालयों (Deemed Universities) में गिना जाता है।
- **राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (NIT Jamshedpur):**
  - **स्थापना:** वर्ष **1960** में 'रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज' (REC) के रूप में हुई थी। वर्ष 2002 में इसे एनआईआईटी (NIT) के रूप में अपग्रेड किया गया।
  - **स्थान:** जमशेदपुर।

2. प्रमुख प्रबंधन संस्थान (Management Institutes)

- **एक्सएलआरआई (XLRI - Xavier School of Management):**
  - **स्थापना:** वर्ष **1949** में सोसायटी ऑफ जीसस (पादरी जे.एस. मजूमदार) द्वारा की गई थी।
  - **स्थान:** जमशेदपुर।
  - **विशेष गौरव:** यह भारत का **सबसे पुराना बिजनेस स्कूल (B-School)** है और प्रबंधन शिक्षा में वैश्विक पहचान रखता है।
- **भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM Ranchi):**
  - **स्थापना:** वर्ष **2010** में देश के आठवें आईआईएम (IIM) के रूप में की गई।
  - **स्थान:** रांची।

3. प्रमुख विश्वविद्यालय (Universities)

www.CrackJSSC.com

- **रांची विश्वविद्यालय (Ranchi University):**
    - **स्थापना :** 12 जुलाई **1960** को बिहार विश्वविद्यालय से अलग करके इसकी स्थापना की गई थी। यह झारखण्ड का प्रमुख और पुराना विश्वविद्यालय है।
- **विनोबा भावे विश्वविद्यालय (VBU Hazaribagh):**
    - **स्थापना :** वर्ष **1992** में रांची विश्वविद्यालय को विभाजित करके हजारीबाग में इसकी स्थापना की गई।
- **सिद्धू-कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय (SKMU Dumka):**
    - **स्थापना :** 10 जनवरी **1992** को पहाड़िया और संथाल परगना क्षेत्र के छात्रों के लिए दुमका में की गई।

---

www.CrackJSSC.com

अध्याय 25: झारखण्ड के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र (Musical Instruments)

झारखण्ड के वाद्य यंत्रों को उनकी बनावट और ध्वनि उत्पादन के आधार पर मुख्य रूप से तीन श्रेणियों (तंतु, अवनद्ध, और सुषिर) में बांटा जाता है।

1. अवनद्ध वाद्य यंत्र (चर्म वाद्य – थपथपाकर बजाए जाने वाले)

- **मांदर (Tamak):**
  - यह झारखण्ड का **सबसे प्राचीन और प्रमुख लोकप्रिय वाद्य यंत्र** है। इसे 'तुमदाक' भी कहा जाता है।
  - **बनावट:** इसकी मिट्टी या लकड़ी के खोखले घेरे के दोनों सिरों पर बंदर या बकरी की खाल मढ़ी होती है। यह लगभग हर जनजातीय उत्सव और सामूहिक नृत्य का अनिवार्य हिस्सा है।
- **नगाड़ा:**
  - यह आकार में बहुत भारी और बड़ा होता है। इसे लकड़ी के डंडों से बजाया जाता है। संथाल परगना और छोटानागपुर दोनों क्षेत्रों में इसके विभिन्न आकार प्रचलित हैं।
- **ढाक:**
  - यह आकार में ढोलक से बड़ा होता है और इसे मुख्य रूप से दुर्गा पूजा, मनसा पूजा और पाइका जैसे युद्ध नृत्यों के दौरान बहुत तेज ध्वनि के साथ बजाया जाता है।

2. तंतु वाद्य यंत्र (तार वाले वाद्य)

- **केन्द्री (Kendri):**
  - इसे **"झारखण्ड का वायलिन"** कहा जाता है। इसमें कछुए की खाल या सूखे कद्दू के खोखले भाग के ऊपर तार बांधकर धनुष (बो) की सहायता से बजाया जाता है।
- **भुआंग:**
  - यह संथाल जनजाति का एक प्रमुख वाद्य यंत्र है। इसमें एक बड़े धनुष जैसी बनावट होती है जिसमें से केवल एक तार से गूंजने वाली गंभीर ध्वनि निकलती है। यह मुख्य रूप से दसईं नृत्य के समय बजाया जाता है।

3. सुषिर वाद्य यंत्र (फूंककर बजाए जाने वाले)

- **बांसुरी (Flute):**
  - झारखण्ड में मिलने वाले विशेष डोंगरा बांस से अत्यंत सुरीली बांसुरी बनाई जाती है, जो यहाँ के लोक संगीत की आत्मा मानी जाती है।
- **शहनाई / मदनभेरी:**

www.CracKSSC.com

- यह विवाह और अन्य शुभ तथा मांगलिक अवसरों पर सदानों और जनजातियों दोनों में बजाया जाने वाला मुख्य फूंक वाद्य है।

---

www.CrackJSSC.com

📜 अध्याय 26: झारखण्ड आंदोलन एवं पृथक राज्य गठन का इतिहास

झारखण्ड को बिहार से अलग कर एक स्वतंत्र राज्य बनाने का संघर्ष लगभग एक सदी लंबा रहा। परीक्षा में इस आंदोलन की समयरेखा (Timeline) से अनिवार्य रूप से प्रश्न पूछे जाते हैं।

1. आंदोलन की शुरुआत और शुरुआती संगठन

- **क्रिश्चियन स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन (1912):**
  - इसकी स्थापना **जे. बार्थोलोमन** द्वारा की गई थी। इन्हें **"झारखण्ड आंदोलन का जन्मदाता"** माना जाता है। इस संगठन का उद्देश्य गरीब ईसाई आदिवासियों की मदद करना था।
- **छोटानागपुर उन्नति समाज (1915):**
  - जुएल लकड़ा, पॉल दयाल और बंदी राम उरांव के नेतृत्व में इसकी स्थापना हुई। यह झारखण्ड का **पहला अंतर-जनजातीय संगठन** था। इसी संगठन ने 1928 में **साइमन कमीशन** को झारखण्ड को अलग राज्य बनाने के लिए एक मांग पत्र सौंपा था।
- **आदिवासी महासभा (1938):**
  - विभिन्न छोटे संगठनों को मिलाकर इसका गठन किया गया। वर्ष 1939 में **जयपाल सिंह मुंडा** इसके अध्यक्ष बने, जिसके बाद इस आंदोलन को व्यापक राजनैतिक धार मिली।

2. राजनैतिक संघर्ष और राज्य गठन

- **झारखंड पार्टी (1950):**
  - जयपाल सिंह मुंडा ने जमशेदपुर में आदिवासी महासभा का नाम बदलकर **झारखंड पार्टी** कर दिया। इसका चुनाव चिन्ह 'मुर्गा' था। इस पार्टी ने 1952 के बिहार विधानसभा चुनावों में मुख्य विपक्षी दल की भूमिका निभाई थी।
- **झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM - 1973):**
  - 4 फरवरी 1973 को धनबाद के गोल्फ मैदान में **विनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन और ए. के. रॉय** ने जेएमएम की स्थापना की। विनोद बिहारी महतो इसके पहले अध्यक्ष और शिबू सोरेन पहले महासचिव बने।
- **बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक, 2000:**
  - **25 अप्रैल 2000:** बिहार विधानसभा द्वारा विधेयक पारित किया गया।
  - **2 अगस्त 2000:** लोकसभा द्वारा विधेयक पारित हुआ।
  - **11 अगस्त 2000:** राज्यसभा द्वारा विधेयक पारित हुआ।
  - **25 अगस्त 2000:** तत्कालीन राष्ट्रपति **के. आर. नारायणन** ने इस विधेयक पर अपने हस्ताक्षर कर इसे कानून का रूप दिया।
- **राज्य का औपचारिक गठन:**

www.crackjssc.com

- **15 नवंबर 2000** को भगवान बिरसा मुंडा की 125वीं जयंती के अवसर पर झारखण्ड देश के **28वें राज्य** के रूप में अस्तित्व में आया। बाबूलाल मरांडी इसके पहले मुख्यमंत्री और प्रभात कुमार पहले राज्यपाल बने।

---

www.CrackJSSC.com

🏭 अध्याय 27: झारखण्ड के उद्योगों की भौगोलिक स्थिति एवं औद्योगिक क्लस्टर

झारखण्ड के उद्योग मुख्य रूप से कच्चे माल (खनिजों) की उपलब्धता के आधार पर तीन प्रमुख औद्योगिक गलियारों या क्लस्टरों में विभाजित हैं:

1. **दामोदर घाटी औद्योगिक क्लस्टर:** यह धनबाद, बोकारो और रामगढ़ जिलों में विस्तृत है। यहाँ कोयला, बिजली और इस्पात उद्योगों का मुख्य संकेंद्रण है।
2. **सुवर्णरेखा घाटी औद्योगिक क्लस्टर:** यह रांची से लेकर जमशेदपुर और घाटशिला तक फैला हुआ है। यहाँ भारी इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल (टाटा मोटर्स), ताँबा उद्योग और एल्युमिनियम उद्योग (मुरी) स्थित हैं।
3. **उत्तरी सूक्ष्म औद्योगिक क्लस्टर:** यह कोडरमा, गिरिडीह और चतरा में फैला है, जहाँ अभ्रक (मायका) प्रसंस्करण और री-रोलिंग मिलें स्थित हैं।

---

www.CrackJSSC.com

📝 अध्याय 28: JSSC इंटरमीडिएट स्तर हेतु महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्न (Mock Test Set)

भूगोल एवं प्रशासनिक ढांचा

Q1. झारखण्ड राज्य का कुल क्षेत्रफल भारत के कुल क्षेत्रफल का कितना प्रतिशत है?
(A) 2.14%
(B) 2.42%
(C) 3.12%
(D) 2.82%
उत्तर: (B) 2.42%

Q2. झारखण्ड का एकमात्र जिला कौन-सा है जो उत्तर प्रदेश की सीमा को स्पर्श करता है?
(A) पलामू
(B) गढ़वा
(C) चतरा
(D) लातेहार
उत्तर: (B) गढ़वा

Q3. क्षेत्रफल की दृष्टि से झारखण्ड का सबसे छोटा प्रमंडल कौन-सा है?
(A) कोल्हान
(B) पलामू
(C) संथाल परगना
(D) दक्षिणी छोटानागपुर
उत्तर: (B) पलामू

Q4. झारखण्ड की सबसे ऊँची चोटी पारसनाथ की ऊँचाई फीट में कितनी है?
(A) 4431 फीट
(B) 4380 फीट
(C) 4500 फीट
(D) 4120 फीट
उत्तर: (A) 4431 फीट (1365 मीटर)

Q5. झारखण्ड का सबसे ठंडा स्थान 'नेतरहाट' किस जिले के अंतर्गत आता है?
(A) गुमला
(B) लातेहार
(C) लोहरदगा
(D) सिमडेगा
उत्तर: (B) लातेहार

इतिहास एवं जनजातीय विद्रोह

Q6. झारखण्ड क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध किया गया प्रथम विद्रोह कौन-सा था?
(A) चूआड़ विद्रोह
(B) ढाल विद्रोह

www.CrackJSSC.com

(C) चेरो विद्रोह
(D) तिलका आंदोलन
उत्तर: (B) ढाल विद्रोह (1767 ई.)

Q7. किस आदिवासी विद्रोह को कार्ल मार्क्स ने "भारत की प्रथम जनक्रांति" कहा था?
(A) मुंडा उलगुलान
(B) संथाल हूल
(C) कोल विद्रोह
(D) खरवार आंदोलन
उत्तर: (B) संथाल हूल (1855-56)

Q8. भगवान बिरसा मुंडा की मृत्यु किस जेल में और किस कारण से हुई थी?
(A) हजारीबाग जेल – टीबी
(B) रांची जेल – हैजा
(C) भागलपुर जेल – फाँसी
(D) पटना जेल – मलेरिया
उत्तर: (B) रांची जेल – हैजा (9 जून 1900)

Q9. 1940 ई. में कांग्रेस का 53वाँ वार्षिक अधिवेशन झारखण्ड के किस स्थान पर हुआ था?
(A) रांची
(B) रामगढ़
(C) धनबाद
(D) जमशेदपुर
उत्तर: (B) रामगढ़ (अध्यक्षता: मौलाना अबुल कलाम आजाद)

---

www.CrackJSSC.com

कला, संस्कृति, त्योहार एवं जनजातियाँ

Q10. झारखण्ड के किस प्रसिद्ध लोक नृत्य को वर्ष 2010 में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया था?

(A) पाईका
(B) छऊ
(C) जदुर
(D) करमा

उत्तर: (B) छऊ नृत्य

Q11. संताली भाषा की प्रामाणिक लिपि 'ओलचिकी' का आविष्कार किसने किया था?

(A) लोको बोदरा
(B) पंडित रघुनाथ मुर्मू
(C) डॉ. राम दयाल मुंडा
(D) जयपाल सिंह मुंडा

उत्तर: (B) पंडित रघुनाथ मुर्मू (1941 ई.)

Q12. उरांव जनजाति के पारंपरिक युवागृह को किस नाम से जाना जाता है?

(A) गीतिओरा
(B) धूमकुड़िया
(C) घोटुल
(D) टंडा

उत्तर: (B) धूमकुड़िया

Q13. सोहराय त्योहार मुख्य रूप से किस उत्सव के रूप में मनाया जाता है?

(A) फसल कटाई
(B) पालतू पशुओं की पूजा
(C) प्रकृति व वसंत पूजा
(D) भाई-बहन का प्रेम

उत्तर: (B) पालतू पशुओं की पूजा (दीपावली के अगले दिन)

---

www.CrackJSSC.com

खान-खनिज, उद्योग, योजनाएँ एवं विविध

Q14. "भारत की अभ्रक राजधानी" (Mica Capital of India) किसे कहा जाता है?

(A) झरिया
(B) कोडरमा
(C) घाटशिला
(D) जादूगोड़ा

उत्तर: (B) कोडरमा

Q15. बोकारो स्टील प्लांट की स्थापना किस देश के सहयोग से तृतीय पंचवर्षीय योजना के दौरान की गई थी?

(A) ब्रिटेन
(B) सोवियत संघ (रूस)
(C) जर्मनी
(D) अमेरिका

उत्तर: (B) सोवियत संघ (USSR)

Q16. सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना के तहत छात्राओं को कुल कितनी वित्तीय सहायता दी जाती है?

(A) ₹30,000
(B) ₹40,000
(C) ₹50,000
(D) ₹25,000

उत्तर: (B) ₹40,000

Q17. झारखण्ड के एकमात्र व्यक्तित्व कौन हैं जिन्हें मरणोपरांत सर्वोच्च सैन्य सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया?

(A) अल्बर्ट एक्का
(B) रणधीर वर्मा
(C) जतरा भगत
(D) रघुनाथ महतो

उत्तर: (A) लांस नायक अल्बर्ट एक्का (1971 भारत-पाक युद्ध)

www.CrackJSSC.com

Q18. झारखण्ड पार्टी का गठन 1950 ई. में जमशेदपुर में किसके द्वारा किया गया था?

(A) शिबू सोरेन

(B) जयपाल सिंह मुंडा

(C) विनोद बिहारी महतो

(D) बाबूलाल मरांडी

उत्तर: (B) जयपाल सिंह मुंडा

www.CrackJSSC.com